INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in October 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण क्षमता तथा जीवन सन्तुष्टि के सम्बन्ध का विश्लेषण

Reeta Srivastava, Research Scholar, Dept. of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University
Dr. Ram Dhan Bharti Associate Professor, Dept. of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University

सार

शिक्षा समाज तथा प्रक्रिया ये तीनों तत्व एक दूसरे से आपस में इस प्रकार सम्बन्धित है। जिस प्रकार से मानव तथा उसका मस्तिष्क। यदि समाज में शिक्षा नहीं होगी तो विकास की प्रक्रिया गति हीन हो जायेगी और विकास न होने से समाज का अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा। समाज तथा शिक्षा का मुख्य अंग मानव है मानव से ही शिक्षा है तथा शिक्षा से समाज। मानव की यह प्रकृति होती है। कि वह सदैव वैचारिक मुद्रा में लगा रहता है। चाहे परिवार हो या विद्यालय वह गतिशील प्रक्रिया के द्वारा अपने वातावरण को प्रभावित करता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यक शर्त दक्षतापूर्ण शिक्षण कार्य है, शिक्षक की दक्षता का प्रभाव सम्पूर्ण समाज के निर्माण में निर्णायक होता है। राष्ट्र निर्माण में गुणात्मक उच्च शिक्षा अपनी प्रभावी भूमिका का निर्वहन करती है। अतएव उच्च शिक्षा में शिक्षण दक्षता के द्वारा ही गुणवत्ता के मानकों को संगठित किया जा सकता है। अतः राष्ट्रहित के सन्दर्भ में शैक्षिक गुणात्मक उन्नयन हेतु उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की शिक्षण दक्षता की वर्तमान स्थिति का अवलोकन समीचीन प्रतीत होता है। शिक्षा अध्ययन विषय के साथ विकास की प्रक्रिया भी है। अध्ययन विषय तथा विकास की प्रक्रिया के क्षेत्र शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुदेशन क्रियाओं को समझना तथा कक्षा शिक्षण में प्रयुक्त करना है परन्तु अभी भी शिक्षा शास्त्र के अन्तर्गत शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा दर्शन, शिक्षा का समाजशास्त्र, शिक्षा का इतिहास तथा शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन एवं अध्यापन किया जा रहा है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता के आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन करना है।

प्रस्तावना–

शिक्षण की गुणवत्ता शिक्षक की ।क्षमता पर आधारित होती है। क्योंकि अध्यापक की अभिक्षमता शिक्षक की तत्परता अथवा किसी कार्य के प्रति रूचि अथवा रूझान से होती है तथा ।क्षमता का संबंध विशेष योग्यताओं से होता है। स्वाभाविक सी बात है कि किसी व्यक्ति में जितनी अधिक योग्यतायें होगी वह व्यक्ति उतना ही अधिक प्रभावशाली व्यक्तितत्व से परिपूर्ण होगा। शिक्षक का अध्यापन अभिक्षमता से अत्यंत महत्वपूर्ण संबंध होता है। शिक्षक अपने शिक्षण कार्य को जितनी अधिक अभिक्षमता से युक्त होकर कार्य करेगा शिक्षण अथवा शिक्षा की गुणवत्ता उतनी ही अधिक होगी। तथा उसको शिक्षण कार्य में उतना ही अधिक संतोष प्राप्त होगा। शिक्षा किसी भी राष्ट्र को उसकी सभ्यता एवं संस्कृति की मूलधारा से जोड़ने वाली जीवनीशक्ति है। यह किसी राष्ट्र को विकसित करने तथा उसके उत्थान हेतु स्थायी ऊर्जा प्रदान करने का महत्वपूर्ण साधन है। यह देश और समाज के लिए सुयोग्य, उपयोगी, संवेदनशील एवं उत्तरदायी नागरिकों के निर्माण में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। राष्ट्रीय विकास में शिक्षा का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। भारत जैसे विकासशील देश में

SUSHANT UNIVERSITY ORGANIZED INTERNATIONAL CONFERENCE ON
"ADVANCES IN MULTIDISCIPLINARY RESEARCH AND INNVOATION" ICAMRI-2023
ON 28-29TH OCTOBER 2023
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in October 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

माध्यमिक शिक्षा का महत्व विशेष रूप से है। जिस प्रकार से मानव शरीर का महत्वपूर्ण भाग उसका धड़ होता है उसी प्रकार शैक्षिक संरचना का मध्य भाग उसकी माध्यमिक शिक्षा होती है। प्राथमिक व उच्च शिक्षा की महत्वपूर्ण कड़ी माध्यमिक शिक्षा ही है। यही शिक्षा किशोरावस्था की जनशक्ति का स्रोत है। देश के भावी कर्णधार माध्यमिक शिक्षा के ही ढाँचे में बनते और बिगड़ते हैं। सभी क्षेत्रों में नेतृत्व करने की क्षमता इसी स्तर पर विकसित की जाती है। माध्यमिक स्तर का विद्यार्थी न बालक होता है और न बड़ा और वह तेजी से एक स्थिति दूसरी स्थिति में पहुँच रहा होता है। वह वर्तमान मूल्यों को संदेह की दृष्टि से देखता है। वह एक विचित्र आदर्शवाद से ग्रसित तथा संसार का पुनर्निमाण अपनी इच्छानुसार चाहता है। यह जीवन के आँधी एवं तूफान के दिन है। इस विचित्र एवं नाजुक स्थिति में विद्यार्थियों को उचित निर्देशन एवं मार्गदर्शन केवल और केवल कुशल एवं प्रभावपूर्ण शिक्षक तथा उत्कृष्ट विद्यालयी वातावरण में ही सम्भव है।

वास्तव में योग्य, कुशल एवं प्रभावपूर्ण शिक्षक ही वह धुरी है जिसके चारों ओर सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया घूमती है। शिक्षक के सामान्य एवं कक्षागत क्रियाकलाप शिक्षक व्यवहार की ओर संकेत करते हैं और इन क्रियाकलापों पर शिक्षक की प्रभावशीलता आधारित होती है। इस सफलता के सन्दर्भ में शिक्षक के प्रति अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रतिक्रियाएं प्रदर्शित की जाती हैं। ये प्रतिक्रियाएं शिक्षक की प्रभावशीलता को दर्शाती हैं। शिक्षक की प्रभावशीलता में उसकी शिक्षा तथा सामान्य व तात्कालीन ज्ञान, प्रेरित करने की योग्यता, शिक्षण कौशल, व्यवसाय से सम्बन्धित ज्ञान, पाठ्य सहगामी क्रियाओं का ज्ञान, कक्षा–कक्ष प्रबन्ध की योग्यता, समाज एवं विद्यालय के अन्य सदस्यों के साथ आपसी मेल–मिलाप का स्वभाव, संवेगात्मक रूप से स्थिर, सलाह, निर्देशन की योग्यता, नैतिक रूप से कुशल तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व को समाहित किया जाता है। इन सब क्रियाओं के प्रति विद्यालय के प्राचार्य, साथी समूह, स्वयं शिक्षक एवं विद्यार्थियों की प्रति क्रियाओं में आमुक शिक्षक की प्रभावशीलता के रूप में प्रेरित किया जाता है।

पूर्व में किये गये अध्ययनों से ज्ञात होता है अग्रवाल व चंदेल (2019) ने निष्कर्ष रूप में पाया कि शिक्षक प्रभावशीलता और कृत्य संतोष प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित थे। जायसवाल एवं गुप्ता (2011) ने निष्कर्ष में पाया कि नियमित शिक्षक–शिक्षिकायें अधिक प्रभावशाली थे। इसका कारण उच्च योग्यता, प्रशिक्षण, प्राप्त सुविधायें वेतनमान व वेतनवृद्धि, कार्य सुरक्षा व नियुक्ति प्रक्रिया आदि थे। अग्रवाल (2012) ने निष्कर्ष में पाया गया कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के शिक्षकों की प्रभावशीलता में सुधार की आवश्यकता थी तथा संगठनात्मक वातावरण ने शिक्षक प्रभावशीलता को प्रभावित किया। सक्सेना, जे० और सिंह एस० (2008) ने अध्ययन में पाया कि प्रभावी शिक्षण करने वाले शिक्षक अपने व्यवसाय से अधिक संतुष्ट पाये गये।

किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली की सफलता अधिकांशतः उस देश के शिक्षकों की गुणवत्ता एवं प्रभावशीलता पर निर्भर करती है। शिक्षकों का उत्तरदायित्व कक्षा में पाठ्य या विषय–वस्तु का शिक्षण ही नहीं वरन् राष्ट्र की चिंतनधारा को बदलने की शक्ति, व्यवसाय, चुनाव, सामाजिक जागरूकता, समाज व देश का विकास पाठ्य सहगामी क्रियाएं नवीन तकनीक की जानकारी देना भी उसका कर्तव्य है।

वर्तमान समय में शिक्षित बेरोजगारी बढ़ने तथा अन्य विकल्प न मिलने पर विवश होकर व्यक्ति

अध्यापन कार्य करने लगे हैं। विवशतावश शिक्षक बन जाने पर भी उनके सामने कुछ ऐसे कारक उत्पन्न हो जाते हैं, जिससे उनकी शिक्षण प्रभावशीलता प्रभावित होती है। उनकी योग्यता क्षमतानुसार उचित पद, सेवा सुरक्षा, वेतन, कार्य दशाएं प्राप्त साधन– सुविधाएं, वातावरण, संगठन का अभाव, सहयोगियों, प्रधानाचार्य, प्रबन्धकों के साथ उचित मानवीय सम्बन्धों के अभाव आदि के कारण शिक्षक कुंठित रहते है। परिणामस्वरूप वह अपने शिक्षण कार्य के साथ चाहकर भी न्याय नहीं कर पाते है। अतः उचित पर्यावरण एवं सहयोगात्मक व्यवहार न मिलने से शिक्षकों में अनेक मनोवैज्ञानिक समस्यायें उत्पन्न हो जाती है। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षक प्रभावपूर्ण शिक्षण करने में सक्षम नहीं हो पाते है। वे अपने कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों का पालन उचित प्रकार से नहीं कर सकेंगे साथ ही शिक्षक विद्यार्थियों को उनके परिवार, समाज व देश के प्रति दायित्वों की जानकारी प्रदान करने में सक्षम नहीं हो सकेंगे, जिसका प्रभाव पूरे शिक्षण एवं राष्ट्र पर पड़ता है। इसलिए एक कुशल एवं प्रभावपूर्ण शिक्षक के लिए अपने व्यवसाय के प्रति संतुष्टि का होना अति आवश्यक है।

अतः अध्ययनकर्ता ने सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता तथा जीवन सन्तुष्टि में सम्बन्ध विषय में अध्ययन किया है।

अध्ययन का उद्देश्य–

अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

- सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता तथा जीवन सन्तुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
- सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता के आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

अध्ययन में उद्देश्य के आधार पर निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

- सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध नहीं है।
- सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता के आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या–

प्रस्तुत अध्ययन में समग्र के रूप में आजमगढ़ जनपद में स्थित उन सभी सरकारी सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को लिया गया है जो वर्तमान समय में शिक्षण के कार्य को सम्पादित कर रहे हैं।

अध्ययन का न्यादर्श–

शोध कार्य में आजमगढ़ जनपद के सरकारी सहायता प्राप्त माध्यमिक स्तर के 10 सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों से 50 शिक्षकों का चयन किया गया है।

शोध उपकरण–

प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण के रूप में शिक्षक–प्रभावशीलता शोध को मापने हेतु प्रमोद कुमार एवं डी0एन0 मूथा द्वारा निर्मित– **"शिक्षक प्रभावशीलता मापनी"** जिसके अन्तर्गत शिक्षक प्रभावशीलता मापनी के पाँच आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि मापनी का निर्माण डॉ0 प्रमोद कुमार एवं डॉ0 (श्रीमती) जयश्री ध्यानी द्वारा निर्मित किया गया है।

सांख्यिकी विधियाँ–

आँकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या हेतु सहसम्बन्ध आघूर्ण गुणांक सांख्यिकी विधियाँ का प्रयोग किया गया है।

उद्देश्य–1 सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता तथा जीवन सन्तुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन–

H1 : सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध है।

H01 : सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

तालिका–1

सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह–सम्बन्ध गुणांक

चर	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
शिक्षण क्षमता एवं जीवन सन्तुष्टि	50	0.3289	.05

*.05 स्तर पर सार्थक

तालिका–1 से स्पष्ट है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक क्रमशः 0.3289 है जो .05 स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जा सकती है। अतः कहा जा सकता है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है अर्थात् शिक्षण क्षमता में कमी या वृद्धि का उनके जीवन सन्तुष्टि में कमी या वृद्धि से सम्बन्धित है।

उद्देश्य–2 सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता के आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि में सम्बन्ध में सम्बन्ध का अध्ययन–

H2 : सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता के आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य

सम्बन्ध है।

H01 : सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता के आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

तालिका–2

सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता के आयाम शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध को दर्शाते सह–सम्बन्ध गुणांक

शिक्षण क्षमता के आयाम तथा जीवन सन्तुष्टि	**N**	**सह–सम्बन्ध गुणांक (r)**	**सार्थकता स्तर**
शैक्षिक एवं जीवन सन्तुष्टि	50	0.2518	.05
व्यावसायिक एवं जीवन सन्तुष्टि	50	0.3218*	.05
सामाजिक एवं जीवन सन्तुष्टि	50	0.3409*	.05
संवेगात्मक एवं जीवन सन्तुष्टि	50	0.2044	.05
नैतिक एवं जीवन सन्तुष्टि	50	0.3968*	.05
व्यक्तित्व एवं जीवन सन्तुष्टि	50	0.3383*	.05

*.05 स्तर पर सार्थक

तालिका–2 से स्पष्ट है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता की विमा व्यावसायिक, सामाजिक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक क्रमशः 0.3218, 0.3409, 0.3968 एवं 0.3383 हैं जो .05 स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जा सकती है। अतः कहा जा सकता है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता की विमा व्यावसायिक, सामाजिक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है अर्थात् शिक्षण क्षमता की विमा व्यावसायिक, सामाजिक, नैतिक एवं व्यक्तित्व में कमी या वृद्धि का उनके जीवन सन्तुष्टि में कमी या वृद्धि से सम्बन्धित है।

सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता की विमा शैक्षिक एवं संवेगात्मक तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक क्रमशः 0.2518 एवं 0.2044 है जो .05 स्तर पर असार्थक है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जा सकती है। अतः कहा जा सकता है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता की विमा शैक्षिक एवं संवेगात्मक तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध नहीं है अर्थात् शिक्षण क्षमता की विमा शैक्षिक एवं संवेगात्मक में कमी या वृद्धि का उनके जीवन सन्तुष्टि में कमी या वृद्धि से सम्बन्धित नहीं है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है।
- सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता की विमा

व्यावसायिक, सामाजिक, नैतिक एवं व्यक्तित्व तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है।

- सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण क्षमता की विमा शैक्षिक एवं संवेगात्मक तथा जीवन सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

इस प्रकार उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि अध्यापक तभी अपने छात्रों का सर्वांगीण विकास करने में सफल नहीं होता है जब तक वह अपने शिक्षण को प्रभावी ढंग से न प्रस्तुत करे, और यह तभी सम्भव है जब तक वह अपने जीवन से संतुष्ट न हो। विभिन्न कारक शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा उसकी जीवन संतुष्टि को प्रभावित करते हैं। शिक्षा की गुणवत्ता बनी रहे उसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक अध्यापन कार्य को एक व्यवसाय के रूप में स्वीकार करे। वर्तमान में शिक्षकों की दशा में पर्याप्त सुधार की आवश्यकता है जिससे वह अपने व्यवसाय के प्रति न्याय कर सके। अध्यापन के प्रदर्शन को बेहतर और प्रभावशाली बनाने के लिए आवश्यक है कि शैक्षिक समस्याओं का समाधान किया जाय ताकि भावी शिक्षक शिक्षण कला में निपुण हो सके तभी जाकर वह विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का विकास कर सकेंगे।

सन्दर्भ सूची

- अग्रवाल, एस. व चंदेल, एन.पी.एस. (2019) अनुदानित व गैर अनुदानित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का उनके कृत्य संतोष पर प्रभाव का अध्ययन, परिप्रेक्ष्य, वर्ष 16, अंक 3, दिसम्बर 2009 पृष्ठ संख्या 53–66.
- जायसवाल, वी. व गुप्ता, पी. (2017) नियमित शिक्षक–शिक्षिकाओं व शिक्षामित्रों के मानसिक स्वास्थ्य के सम्बन्ध में उनकी प्रभावशीलता का अध्ययन, वैश्विक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, वाल्यूम–1, नम्बर–1 जून 2011, पृष्ठ सं. 31–42.
- अग्रवाल, एस. (2020) अनुदानित व गैर अनुदानित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन, शिक्षा चिंतन, त्रिमूर्ति संस्थान, अक्टूबर–नवम्बर पृष्ठ संख्या 14–22.
- शिक्षा चिन्तन (2008), शैक्षिक त्रैमासिक शोध पत्रिका, त्रिमूर्ति संस्थान, नई दिल्ली; वर्ष 15, अंक 3, पृ. सं. 81–88.
- सिंह श्रद्धा तथा यादव देवेन्द्र कुमार (2018), सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा जीवन सन्तुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन, आईजेएसएसईटी, 248–253
- शर्मा, आर0 ए0 (2016), अध्यापक शिक्षा, आर0लाल बुक डिपो, मेरठ।
- पाण्डेय, के0पी0 (2017), अध्यापक शिक्षा, वाराणसी प्रकाशन, वाराणसी।
- शर्मा, प्रभा व नाटाणी (2016), प्रकाश नारायण, शैक्षिक तकनीकी और कक्षा–कक्ष प्रबंधन, माया प्रकाशन मंदिर, जयपुर।
- सिंह, जे.डी. व अन्य (2014), विद्यालय प्रबन्ध व शिक्षा की समस्याएं, रिसर्च पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।